भृगु

मासिक पत्रिका

सितम्बर, १९७०

रजि० नं० २. एन/१९५६/७०

परिवार के लिए हिन्दूत्व एवम् नैतिकता की प्रेरक अपूर्व पत्रिका

* स्वामी विवेकानन्द विशेषांक *



"साहस का अवलम्बन करो गर्व से कहो कि मैं भारतवासी हूं और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है। भारतवासी मेरे प्राण हैं। भारत की देव-देवियां मेरे ईश्वर हैं, भारत का समाज मेरे बचपन का झूला, जवानी की फुलवारी और बुढ़ापे की काशी है।" ...स्वामी विवेकानन्द

वार्षिक शुल्क रु० ५-००

मूल्य एक प्रति ५० पैसे

सम्पादक:-डा० परस राम छिब्बर

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

विषय सूचि

Advertisement Tarrif :

The rates are exclusive of blocks etc. and are liable to be changed without notice.

Charges	Casual	3 Months	6 Months	1 Year
Full Page ordinary	Rs. 100/-	Rs. 200/-	Rs. 350/-	Rs. 500/-
Half Page ,,	Rs. 65/-	Rs. 125/-	Rs, 225/-	Rs. 325/-
Quarter Page ,,	Rs. 35/-	Rs. 75/-	Rs. 140/-	Rs. 225/-

Special Rates for special position.

Charges are to be paid in advance.

Cross cheques etc. payable to Dr. P. R. Chhibber.
Additional colour printing @ Rs. 10/- extra for each colour.
3 copies of the Journal, containing advertisement will be supplied free.

EDITOR

Pure Ghee Pure Cream

Please Visit

GOPAL

Cream Ghee Store

14, Pushpa Market, Lajpat Nagar,
NEW DELHI-24.

For Repairs of :

RAJDOOT, LAMBRETTA & VESPA

Please Visit :

Auto Service Dealers

I/18, Veer Savarkar Marg,
Lajpat Nagar-II, New Delhi-24.

AT YOUR SERVICE

BAXICO

Dispensing Chemists

LAJPAT NAGAR,
NEW DELHI-24.

Phone : 626746

House for Modern Fashions in
LAJPAT NAGAR
For
Baba Suits, Froks, Children Night Suit, Ladies Dressing Gowns, Brassiers, Night Suit & Ultramodern Ties

WHITEWAYS

Lajpat Nagar, New Delhi-24.

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

सम्पादकीय

प्रिय बन्धुओ !

आज का समय मेरी दृष्टि में उन्नति की ओर अग्रसर न होकर पतन की ओर जा रहा है। आप लोगों ने सम्भवतः बाल्मीकि रामायण के उस स्थल का पाठ किया होगा जिस स्थल में महाराज भरत के ननसाल से लौटने पर भगवान श्री राम के राज्य से निर्वासित होकर बन में भटकने की रोमाँचकारी घटना से उद्विग्न होती हुई माता कौशल्या ने भरत को कहा था।

राज्य कामयमानस्य प्राप्तं राज्य मकण्टकम्।
सम्प्राप्तं बत कैकेय्या शीघ्रं क्रूरेण कर्मणा॥

अर्थात्–"हे भरत अब क्यों मगरमच्छ के समान आँसु वहा रहे हो मुझे यह दृढ़ निश्चय है कि तेरे निर्देश से ही तेरी माँ केकैयी ने क्रूर कर्म के द्वारा यह सब कुछ किया है। अब तुझे अकंटक राज्य मिल चुका है। अब रोने की क्या बात है ?"

इस कटाक्ष को सुन कर भरत ने कई सौगन्धें खाईं. एक शपथ में उन्होंने कहा कि—

विप्र लुप्त प्रजातस्य यत् पाप ब्राह्मणस्य ह।
तत् पापं भवेत्तस्य यस्यार्योऽनुमते गतः॥

अर्थात्–"हे! माता जिस ब्राह्मण के प्रदेश में वैदिक संस्कृति और आर्य मर्यादा का लोप हो जाय और वह उस लुप्त होती जा रही संस्कृति को देखता रहे उक ब्राह्मण को जो पाप लगता है वही पाप मुझे लगे और मैं महान पापी कहलाऊँ यदि मेरी अनुमति से श्री रामचन्द्र जी बन में पधारे हों।"

बन्धुओ, आपने इस सम्वाद से यह हृदयङ्गत किया होगा कि ब्राह्मण का कितना महान उत्तरदायित्व है, इसलिये जब कभी देश की दुर्व्यवस्था का क्रूर चित्र ब्राह्मण के सामने आया तो उसने संसार का नेतृत्व किया और अपनी गिरती हुई मर्यादा को पुनः अपना प्रतिष्ठि स्थान दिया। महाराज मनु ने एक स्थान पर लिखा है :—

धर्मो विद्वत्व धर्मेण सभायत्रोप तिष्ठते।
शल्यं चास्य न कृत्तन्ति विद्वास्तत्र सभा सदाः॥

धर्म के सीने में जब अधर्म बरछी मारकर उसे घायल कर देता है तो वह कराहता हुआ वेदों के विद्वान ब्राह्मणों की सभा में अपने दुःख को दूर करने के लिये प्रवेश करता है यदि उनमें से कोई भी वेद विद्वान उस कराहते हुए धर्म की दीनताभरी वाणि को हृदय से नहीं सुनता तो वह राष्ट्र जिसका कि उत्तरदायित्व उस ब्राह्मण पर है, वह और वह ब्राह्मण महान स्वार्थी, पापी और घृणित बन जाता है।

इन घटनाओं से हमारा प्राचीन इतिहास भरा पड़ा है, आपने कई बार सुना होगा कि धर्म के पतन के कारण कराहती हुई एक राजकन्या ने अपने महल के पास से गुजरते हुए एक उद्‌भट विद्वान कुमारल भट्ट को ललकारते हुए कहा था।

किं करोमि क्वगच्छामि को वेदानुद्धरिष्यति।

अर्थात्–"मैं क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ? इस वैदिक धर्म का कौन उद्धार करेगा ?" यूँ कहिये कि कौन धर्म के सीने में चुभी हुई बरछी को बल पूर्वक निकाल कर उसे शाँत एवं सुखी बनायेगा। उस ब्राह्मण ने इस व्यथित वाणि को सुना और तुरन्त विह्वल होकर उसके मुख से निकला।

मारुदिहि वरारोहे भट्टा चार्योस्ति भूतले।

अर्थात्–"ए देवी ! रोओ नहीं, मैं भट्टाचार्य कुमारल भट्ट जब तक इस भू-मण्डल पर विद्यमान हूँ मैं अपने ब्राह्मण कर्तव्य का पालन करूँगा और पतन की ओर जा रही आर्य मर्यादा का पुनरुद्धार करूँगा।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

tva - 5th Edition, Published by me : Page 118 अथवा 'हिन्दुत्व' हिन्दी नटराज प्रकाशन-पृष्ठ ११४) (यह पुस्तक श्री भाटिया अथवा इन्द्रसेन शर्मा के पास मिलेगी)।

'हिन्दुत्व' ग्रन्थ में वीर सावरकर स्वंय लिखते हैं, "सिन्धू सरिता के उस पार निवास, करने वाले हमारे सिन्धी बन्धुओं के अतिरिक्त अन्य सहस्त्रों हिन्दूजन है, जो विदेशों में निवास करते हैं । ऐसा भी समय आ सकता है. जब हमारे वह हिन्दू बंधु जो अन्य उपनिवेशों में (Hindu Colonists) जा बसे हैं, और आज भी व्यापार, वाणिज्य, संख्या क्षमता और बुद्धिमता के कारण प्रभावो सिद्ध हुए हैं, उस सम्पूर्ण देश के स्वामी बन कर वहाँ अपनी स्वतन्त्र राज सत्ता भी स्थापित करने में सफल हो जाएें तो क्या व हिन्दू न रहेंगें । यह प्रश्न भी उपस्थित किया जा सकता है । क्या हिन्दुस्थान से बाहर अन्यत्र किसी देश में निवास करने वाला व्यक्ति अहिन्दू कहा जाएगा ? ऐसा कदापि न होगा । क्योंकि हिन्दुत्व का प्रथम लक्षण यह नहीं है कि कोई व्यक्ति हिन्दुस्थान से बाहर न रहता हो अपितु यह है कि वह हिन्दुस्थान को ही अपनी पितृ भूमि कहता हो । फिर यह प्रश्न केवल मानने न मानने से ही तो सम्बन्ध नहीं है । जिस किसी के भी पूर्वज भारत से बाहर जा कर बस गए हों, उसे भी तो यही स्वीकार करना होगा, कि हिन्दुस्थान ही मेरी पितृभूमि है । इस भाँति इस परिभाषा में हिन्दू जाति के चतुर्दिक विस्तार के लिये भी स्थान है । हमारे जो उपनिवेश बसे हैं वह तो अपनी सम्पूर्ण सामर्थ्य सहित हिन्दुस्थान को विराट हिन्दुस्तान और 'भारत' को 'वृहतर भारत' बनाने में ही संलग्न रहे हैं । यह उद्योग वह निरन्तर जारी रखें । हिन्दू जाति में जो कुछ भी उत्तम तत्व विद्यमान हैं उन्हें वह मानव मात्र के कल्याण हेतु प्रस्तुत करते रहें । और इस भाँति एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक (From one Pole to other Pole) फैली हुई इस सम्पूर्ण धरती पर निवास करने वाले मानव जन को वह सदगुण सम्पन्न बनाने में भी अपना योगदान दें तथा जहाँ जो कुछ भो उत्तम है उसे उन देशों से ग्रहण कर इस हिन्दू भूमि को समृद्ध बनाओ ।...... हे हिन्दू बन्धुओ ! जब तक हिन्दुस्थान को, अपने पूर्वजों, महापुरुषों तथा अवतारों की लीला स्थली मानते हो, जब तक इस भूमि को तुम पितृभू और पुण्य भू में मान्यता देते हो. तुम में हिन्दू संस्कृति और पावन रक्त के प्रति अभिमान के भाव विद्यमान हैं तब तक तुम सँसार में निषकंटक हो कर बढ़े चलो, जहाँ तक तुम्हारी विस्तार करने की इच्छा है विस्तार करो । हिन्दुत्व की भौगोलिक सीमाओं में ये सम्पूर्ण वसुधा की सीमाऐं ही समाहित हैं ।...... (पृष्ठ ११४/११५)

मैं समझता हूं इससे आपकी शँका का निवारण हो जाएगा ।"

आपका शुभचिन्तक
बाल सावरकर

□ □ □ □

इस अंक में 'चिन्गारी जो बुझी नहीं' के अतिरिक्त बन्गाल के महर्षि विवेकानन्द की जीवनी

(शेष पृष्ठ २० पर)

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

द्वितीय अंश



लेखक - डा० परस राम छिब्बर
प्रधान : भाई मतिदास स्मारक समिति (पंजीकृत)

गतांक से आगे:-

इस से पूर्व की कथा के अंत में 'हिन्दू महासभा' का वह श्लोक दिया गया था, जिस में वीर सावरकर ने 'हिन्दू' शब्द की परिभाषा दी है, और साथ ही यह भी कहा गया था कि उस परिभाषा के नाप-दण्डानुसार प्रत्येक हिन्दू को चाहे वह भारतीय हो अथवा अभारतीय को नहीं नापा जा सकता। यही बाधा अहिन्दूओं के लिये भी खड़ी हो जाती है। इस उलझी हुई समस्या को और स्पष्ट करने के लिये अब हम ऊपर लिखी गई सामग्री के अतिरिक्त, उस काल के पश्चात की और सामग्री, जिस के तथ्य सीलों (Seals) शिलालेखों अथवा इतिहास एवम् भूगोल की पुस्तकों में लिखे हुए मिलते हैं, आप के सामने प्रस्तुत करते हैं।

१. सम्भवत: सर्वप्रथम हिन्दू शब्द का उल्लेख ऋगवेद की समकालीन, पारसियों की वेद समान ही पूज्य पुस्तक, 'यिन्द अवस्ता' में मिलता है। ईरानियों ने उस क्षेत्र, जिस को कि ऋगवेद में 'सप्तसिन्धू' नाम दिया गया हैं, को 'हप्तहिन्दू' अथवा 'हपत हिन्दू' नाम से पुकारा। उसी 'सप्तसिन्धु' के एक भाग सिन्धू द्वीप (सिन्ध और जेहलम नदियों के मध्य का भूभाग), जिस में ईरानी आर्य जाति के लोग भी रहते थे, का नाम 'हिन्दू' देश रखा है, और वहाँ बसने वाली जाति को 'हिन्दू-ओश' (Hinduosh)'- A History of Indian Civilization- By Radha Kamal Mukarjee - पृष्ट १३२

२. मोहन-जोदड़ो और हड़प्पा से मिली सीलों के अध्ययन से पता चलता है, कि उत्तरी भारत के पश्चिमी भाग का नाम 'हिन्दू' और पूर्वी का 'ईरा' था। ऋगवेद में इन्हीं भागों का नाम क्रमश: 'सिन्धवह:' (Sindhavah) और ईरावतीह: (Iravatih) लिखा है - (Fateh Singh - The Hindustan Times, Delhi dt. 30 3.67)।

३. इन के अतिरिक्त - Political History of Ancient India- By H. C. Ray Chaudhuri तथा The Pathans- By Olaf Caroe ने हिन्दू देश अथवा हिन्दू द्वीप, सिन्धू और झेहलम नदियों के बीच का वह भूभाग बताया है, जिस के उत्तर पश्चिम में सिन्धू नदी बहती है, और

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

पूर्व दक्षिण की ओर उसी नदी से चालीस मील के अन्तर पर तक्षशिला (Taxila) में मरगिला घाटी है।

४. तदुपरान्त हम इसी नाम का प्रयोग ईरान के दारा वंश (Darius Dynasty) के राज्य काल में, पाँचवी शताब्दीं ई०पू० में उन के शिला लेखों बिस्सीतान (Bisitan = Behistan) और पारस प्रदेश के परसीपोलिस (Persipolis) नगर के समीप दारा तृतीय के नक्शे रुस्तम नाम के मकबरे पर खुदा हुआ देखते हैं।

Political History of Ancient India
-By H. C. Ray Chaudhuri.

उन शिलालेखों से पता चलता है कि उन के राज्य के पूर्व दक्षिण में दो प्रदेश गधार (गधार) और हिदद्‌ (हिन्दू) नाम के थे। उनकी सीमाएँ इस प्रकार थी।

(अ) गंधार- अर्थात वर्तमान पेशावर घाटी (Peshawer Valley) और (आ) हिन्दू द्वीप। पेशावर से परे सिन्धू नदी के दक्षिण पूर्व में लगभग वर्तमान तक्षशिला की मरगिला घाटी तक का नाम।

उपरोक्त शिलालेखों से पता चलता है, कि यही हिन्दू देश या द्वीप ४८६-५१६ ई०पू० के मध्यकाल में ईरानी साम्राज्य का एक प्रदेश बन चुका था।

५. पुरानी बाईबल में भी 'हिन्दू' शब्द लिखा मिलता है।

६. ३२७ ई०पू० में यूनानी सेना, अलक्षेन्द्र (Alexander-सिकन्दर) के नेतृत्व में भारत की ओर जब बढ़ रही थी, तब यूनानी इतिहासकारों ने इसी भूभाग का नाम 'इन्डस (Indus)' इन्डू (Indu) अथवा इन्टू (Intu) लिखा।

यह शब्द सिन्धू अथवा हिन्दू इस लिए उपरोक्त स्वरों में परिवर्तित हुआ, क्योंकि जहाँ यूनानी जाति दन्त स्वरों का प्रयोग करती है, वहाँ वही लोग 'ह' के स्थान पर 'अ' का प्रयोग करते हैं।

□ □ □ □

महात्मा बुद्ध तथा मौर्य काल में, हमें ऐसी कोई सामग्री नहीं मिलती, जिससे हिन्दू शब्द पर कुछ प्रकाश पड़ता हो, बल्कि उस काल में स्वंय महात्मा बुद्ध, जो शाक (एक विदेशी जाति) जाति से था, और सम्राट अशोक अपना परिचय आर्य नाम से देने में गर्व अनुभव करते प्रतीत होते हैं। यह स्मरण रहे कि सम्राट अशोक के आधीन पश्चिम में हिन्दू द्वीप या सिन्धू द्वीप अर्थात तक्षशिला के अतिरिक्त गंधार, कम्बोज और कपिशा (अफ़गानिस्तान) के भूभाग थे।

मौर्य राज्य के ह्रास काल में भारत की उत्तर पश्चिमी सीमा पर यवनों (यूनानियों) की सैनिक शक्ति फिर प्रबल हो जाने से, उन का अधिपत्य गंधार पर भी स्थापित हो गया। उनकी राजधानी तब सिन्धू नदी के तट पर 'औहिन्द' नाम की थी। यह नगर सिन्धू और काबुल (कुभ) नदियों के संगम से कुछ ही पूर्व स्थित था। हो सकता है, कि 'औहिन्द' हिन्द से मिलता जुलता शब्द, किसी बीते हुए युग में गंधार और हिन्दू देश - दोनों की ही राजधानी रहा हो, और उन दोनों देशों की सत्ता

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

उन हाथों में रही हो, जिन्होंने हिन्दू देश से ही आक्रमण करके वहाँ अधिकार स्थापित कर, उस में स्थान (औहिन्द) से ही हिन्द तथा गंधार पर शासन किया हो क्योंकि इससे पूर्व युगों में तो जब भी गाँधारियों ने तक्षशिला (हिन्दू द्वीप) पर अधिकार किया, तब उसको दक्षिणी गँधार नाम से ही अलंकृत किया। राज्य शासन की सुविधा के लिए उत्तरी गंधार की राजधानी तो पुशकलावती (पुशकरावती चारसद्दा) ही रहती थी, किन्तु दक्षिणी गंधार की तक्षशिला हुआ करती थी परन्तु ऐसा हो सकता है, कि उन दो राजधानियों के स्थान पर केवल एक राजधानी अर्थात् औहिन्द से उन दोनों देशों पर नियंत्रण करना आसान होने के कारण ऐसा आयोजन किया गया हो। और यह भी हो सकता है, कि 'हिन्द' के पूर्व 'औ' शब्द को उनकी तत्कालीन भाषा के आधार पर ही जोड़ दिया गया हो, जैसा कि अरबी का शब्द 'अल' 'हिन्द' में या 'सिंध' में जोड़ कर वही शब्द क्रमशः अरबों ने 'अल-हिन्द' और 'अल-सिंध' बना दिए।

५. भविष्य पुराण जो कि मौर्य काल के पश्चात् लिखा गया था, में सप्तसिंधू और हप्तहिंदू दोनों शब्दों का उल्लेख इस प्रकार दिया गया है :-

Janusthane Jainshabde
Sapthindus Thathaiva,
Che Hopthahindur Yavani
Che Punargaya Gurundika.

६. १६५ई० पूर्व में जब शाक जाति ने सकर्दू (Sakardu) से निकलकर कपिशा या कापिनी अर्थात् काबुल पर आक्रमण करते समय, जिस पर्वत को पार किया, उसका नाम इतिहासकारों ने हीनतू (Hientu) बताया है। जिसका वर्तमान नाम 'हिंदूकश' है हिंदू शब्द और 'हीनतू' में कोई विशेष अन्तर प्रतीत नहीं होता।

७. तदुपरान्त एक चीनी इतिहासकार के लेखों से फिर हमें हिंदू नाम का परिचय इस प्रकार मिलता है, कि येन-काओ-चेन (Yen-Kao-Tchen) ने आइन-चू (T'ien Tchoo) अर्थात् हिन्द पर आक्रमण किया।

८. शक जाति जिस समय काबुल से भाग कर सीथियनस्थान (सीस्तान) में अपना जीवन व्यतीत कर रही थी, तब वलभी के जैन मुनि काल का आचार्य के मार्ग दिखाने पर, उन्होंने, सिंध आदि देशों को पार करके, जिस देश पर आक्रमण किया वह 'हिन्दुग्' नाम से व्याख्यात था। यह नाम भी 'हिंदू' नाम से मिलता जुलता है।
(शक विजय)

बलभी उस विशाल हिन्दुग् क्षेत्र का भाग था, जिस में कच्छ गुजरात आदि के भूभाग भी थे।

९. गुप्त काल जिसकी नींव, ३१९-२० ई० में रखी गई, में भी हिंदू नाम का एक देश था। (Early History of Northern India By Sudhakar Chatopadhyaya)

१०. छठी और सातवीं शताब्दी ई० में जो चीनी यात्री ह्यून-त्साँग आदि भारत यात्रा को आये, उन्होंने भी उत्तर पश्चिम की घाटियों से

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

घुसने के पश्चात, जिस भूमि पर पाँव रखे, उस देश का नाम भी हिन्दू ही बताया।

११. सातवीं शताब्दी ई० पश्चात (A.D.) स्थानेश्वर और कन्नौज के शासक हर्षवर्धन के राज कवि ने 'हिंदू' शब्द का प्रयोग हर्ष चरित्र में इस प्रकार किया है,

"अटल नगर अजमेर, अटल हिन्दुस्थानम्"

१२. सातवीं तथा आठवीं शताब्दियों ईस्वी पश्चात् के सिंध पर भार्गव गौत्रिय सारस्वत ब्राह्मण वँश के शासन काल में सिंध की दो राजधानियाँ थीं। पहली अलोर और दूसरी ब्राह्मणाबाद। इन में से ब्राह्मणाबाद तो सिन्ध की राजधानी थी, किन्तु अलौर रोहड़ी से उन भागों पर शासन किया जाता था, जोकि सिन्ध से दक्षिण पश्चिम में हिन्दुस्तान से छीने गए थे।

१३ अरबों ने भारत विजय के इतिहास को फतूह-उल-सिंध और फतूह-उल-हिंद के शीर्ष देकर लिखा है। जिसके उल्लेख फतूह-उल-बलदान, मुअज्जम-उल-बलदान, तारीख इब्न अल कामिल असीर, तारीखे-याकूबी, तारीख-ए-मासूमी, चच नामा, तरखान नामा, बेग लार नामा, इब्न-ए-खुरदाजबे के सफरनामा, अल मसउदी, इब्न-ए-होकल अल-बे-रूनी आदि सबको पुस्तकों में लिखे हुए मिलते हैं।

अल बलाज़री की लिखी पुस्तक (८६२ ई०) फतूह-उल-बलदान (अरबी लिपी और भाषामें) फतूह-उल-सिंध तथा फतूह-उल-हिन्द शीर्षों के नीचे दो अध्याय लिखे हुए मिलते हैं।

फतूह-उल-सिन्ध का अर्थ है 'सिन्ध की पराज्य' और फतूह-उल-हिन्द का 'हिन्द की पराज्य' 'अल' शब्द जो कि दोनों शब्दों के आरम्भ में जोड़ दिया गया है, उसका अरबी भाषा में इतना ही महत्व है, जितना कि अंग्रेजी भाषा में शब्द 'The' का।

(क्रमशः)

॥ नारी परिचय ॥

—राधिका रामेश्वर सिंह

जग में केवल एक चित्र ही,
बनाया विश्व विधाता ने।
तन-जग दर्पण बनाके उसका,
नाम, रख दिया नारी।

विश्व का उद्गम बिन्द है नारी,
दुखकी सेज रातें अंधियारी।
इसके ही स्नेह सीमांचल में,
अब तक सजी मनुज फुलवारी।

विश्व-विभूषित तुम्हीं से नारी -
तु प्रभू की हर रचना में न्यारी।
तुम्हीं से जग जीवन है पाता -
आगे और कहूं क्या माता।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

धारावाहिक ऐतिहासिक उपन्यास (५)

❋ चिंगारी जो बुझी नहीं ❋

लेखक : बक्शी अशोक कुमार छिब्बर

पूर्व कथा:— युवराज की जन्म कुण्डली का फल राजज्योतिषी का कहा राज गुरु विशिष्ट ने महाराज नाहर सेन से कह सुनाया। मध्य-आठवीं शताब्दी में सिंध पर मुस्लिम आक्रांता अनेकों बार पराजित हुए, परन्तु अब सिंधू देश का भविष्य........। मुलतान महाराज की सुपुत्री युवराज से विवाहित हुई। तदुपरान्त पुत्र रत्न को जन्म दे स्वर्ग सिधार गई। दूसरा विवाह लाड़ी बाई से हुआ। राजकुमारी के विवाह से सिंधू देश का अनिष्ट ज्योतिष विद्यानुसार निश्चित था। इसलिए राजकुमारी के विवाह के 'अस्वीकृति संदेश' पर बटिया के महाराज ने क्रोधित हो आक्रमण कर दिया और राजकुमार धीर सेन वीर गति को प्राप्त हुए। परन्तु महाराज धार सेन ने खोई हुई भूमि पुनः युद्ध से प्राप्त कर ली।

★ प्रथम भाग ★

॥ षष्ठम् अध्याय ॥

गतांक से आगे--

राजकुमारी कमल लता प्रति दिन युवराज की दशा देखने वहाँ चली आतीं, और रानी बाई के साथ वहाँ बैठ कर युवराज का दिल बहलाती। परन्तु जब कभी रानी बाई कुछ समय के लिए बाहर जाती तो वहाँ खामोशी का राज्य हो जाता। युवराज राजकुमारी के मुख की ओर देखते रहते और राजकुमारी की पलकें लज्जा के भार से अनायास झुक जातीं।

□ □ □

युवराज चिकित्सा और देख भाल से प्रति दिन स्वस्थ होते गए और चार पाँच दिनों में ही कुछ कुछ चलने-फिरने लगे।

"युवराज अब आप स्वस्थ हो गए हैं।" छठे दिन कमल लता ने रानीबाई की अनुपस्थिति में खामोशी को तोड़ते हुए कहा, 'अब मैं कल से न- - -' वह इसके आगे कुछ न कह सकी। उसका दिल भर आया, और गला रूंध गया। उसके कमल रुपी नैत्रों के दोनों कोरों से आँसुओं की कुछ बूंदें अरुण कपोलों पर लुढ़क आईं।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

वह दूसरी ओर मुंह फेर कर खड़ी हो गई।

राजकुमारी की भीगी पलकों को युवराज ने देख लिया था। उसने राजकुमारी की कलाई को पकड़ कर सहसा अपने पास बिठाते हुए कहा, "कहो! कहो! कमल आगे 'कहो, अब मैं न, न' क्या ?"

राजकुमारी कमल लता ने हृदय की अशान्त नदी की तरह उमड़ती हुई बाढ़ को नेत्रों के जिस बाँध से रोक रखा था, वह बाँध स्नेह के दो शब्द सुनते ही टूट गया। अश्रु टप-टप बहने लगे। वह अवाक् रह गई। मुख को उसने आंचल से ढाँप लिया।

उसकी यह दशा उसके अशान्त हृदय की साक्षी थी।

युवराज उठ खड़ा हुआ, और प्रेमपूर्वक कहने लगा, "पगली हो रही हो, कमल! मेरा तेरा तो जन्म जन्म का अटूट सम्बन्ध है। एक अमिट प्रेम है। मैंने तुम्हें क्या देखा। अपनी ही किसी अमूल्य खोई हुई वस्तु को पा लिया। अतैव खोई हुई वस्तु को पा कर पुन: खो देना मूर्खता होगी, इस लिये मैं आज ही तमाम बात माता जी से कह दूँगा।"

छोलदारी में फिर खामोशी छा गई, जैसे कि वह स्थान निर्जन हो।

कुछ समय के पश्चात युवराज ने राजकुमारी के भीगे हुए नेत्रों को पूंछते हुए कहा, "कमल! मेरी ओर देखो, मेरे नेत्रों में देखो, इन नेत्रों से नीचे झांक कर क्षण भर के लिये मेरे हृदय की ओर देखो, जहां तुम और केवल तुम ही निवास कर रही हो।" युवराज के नेत्रों में एक विशेष चमक नाच रही थी। राजकुमारी कमल लता के आँसू सूख चुके थे। वह भी मन्त्र मुग्ध हो, अपने खोए हुए निवास स्थान के पुनः पा लेने का आनन्द और सन्तोष अनुभव कर रही थी।

राजकुमारी युवराज के नेत्रों में न जाने क्या, और कब तक देखती रही? उसको ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे कि वह इस कर्मभूमि से दूर बहुत दूर क्षितिज से भी परे एक अज्ञात, परन्तु परिचित स्थान पर पहुंच गई हो, जहाँ दसों दिशाओं में शान्ति और प्रेम का राज्य था। जहाँ सूर्य की किरणों के सहारे लटके हुए, दूज के चाँद के झूले को, उसके आशाओं की वायु के शीतल हिलोरे झुला रहे थे। इस नाशवान् संसार से बहुत दूर जहाँ निराशा की परछाँई भी न पहुंच सकती हो। वहाँ वह लता एक बेसुध प्राणी की तरह एक तने से लिपटी खड़ी थी।

राजकुमारी और युवराज इसी हालत में कब तक खड़े रहे? इसका अनुभव सम्भव काल भी न कर सका, परन्तु रानी बाई की पग ध्वनि ने दोनों की तन्द्रा भंग कर दी। राजकुमारी रानीबाई के चरण स्पर्श के लिये, उनके चरणों में झुक गई। युवराज, "माँ" कहता हुआ चारपाई से उठ खड़ा हुआ।

"मैं सब समझती हूं, पुत्री।" रानी बाई ने राजकुमारी को अपनी ओर खींचते हुए कहा, "आओ मेरे पास आओ।" रानी बाई ने राजकुमारी को अपने बाहुपाश में बाँध लिया।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

राजकुमारी ने प्रेम विह्वल हो कर रानी बाई को छाती पर सिर रख कर सिसकना शुरू कर दिया।

रानीबाई की अंगुलियाँ राजकुमारी के सिर के बालों से खेलने लगीं।

"पुत्री तुम्हारे कुल से हमारे बहुत पुराने सम्बन्ध हैं और हम चाहते हैं, कि यह सन्बन्ध और भी …………।"

छोलदारी का पर्दा हटा कर प्रवेश करते हुए, तभी महाराज धारसेन ने यह शब्द सुने तो अधरों पर अंगुली रख कर चुप रहने का संकेत किया।

वाक्य अधूरे का अधूरा रह गया।

□ □ □

"भय्या तुमने मेरी बात क्यों काट दी। ऐसी सुशील, सुन्दर और गुणवान् वीरबाला हमें मिलनी कठिन है।"

"तुम इसे पुत्रवधु बनाने के लिये इतनी आकुल क्यों हो रही हो।" महाराज ने मुस्कराते हुए कहा, "सिंधु देश की राजकुमारी से कहना चाहिए या नहीं। यह उसके माता–पिता से कहने की बात थी, रानी।" आसन पर बैठते हुए महाराज ने विश्वास दिलाया, "हम बहन की आज्ञा का अवश्य ही पालन करेंगे, परन्तु राजधानी में तो पहुँच लेने दो। यह दो राज्यों का सम्बन्ध है, कोई बच्चों का खेल नहीं।

महाराज की बात सुन कर रानी बाई चुप हो गई।

□ □ □

॥प्रथम् भाग॥

॥ सप्तम् अध्याय ॥

भारत सम्राट सिंधु नरेश महाराज धारसेन गिरनार के बनों से आखेट कर के वापिस लौट रहे थे। उन का यह छोटा सा दल लगभग सौ सवारों का था। आगे एक खुली गाड़ी में शेरों का एक जोड़ा मसाले से भरा रखा था। उनके बलौरी नेत्रों में उस समय भी डरावनी चमक थी। उनके खुले हुए चमकीले दान्त उनके राक्षसी स्वभाव का साक्षी थे। पीछे-पीछे लोहे के पिंजरे वाली गाड़ी में जीवित शेर और शेरों के बच्चे थे। जिन की गर्जना, रास्ते में पड़ रहे नगरों में रहने वालों के दिलों को दहलाए देती थी। इनके पीछे लाल रंग की मखमली वस्त्रों में सुसज्जित थे उष्टिनी सवार। हरेक ऊंट पर दो दो, एक आगे, एक पीछे हाथों में नेजा थामे,कमरों में खड्ग लटकाये और पीठ पर ढालें बाँधें, इनकी घनी-घनी दाढ़ियाँ बीच में से चीर निकाल कर दोनों ओर को गूंधी हुई थीं। मुछें ऊपर की ओर बल खा रही थीं। इसके बाद लग-भग एक सौ ऊँचे कद वाले शिकारी कुत्तों की टुकड़ी दिखाई पड़ी। हर कुत्ते की जँजीर एक शिकारी हाथ में थामे चला आ रहा था। उनके दूसरे हाथों में सूर्य की रोशनी में चकाचौन्द करने वाला एक-एक नेज़ा था। यह टुकड़ी सफेद वस्त्र पहिने थी। उनके नेत्रों की लाली सामान्य पुरुषों से अधिक थी। अवसर पड़ जाने पर यह लोग शेरों से हाथों हाथ भिड़ जाते थे। इनके नीले-नीले कटि-बन्धों में चाँदी की म्यानों के अन्दर

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

तेज धार की कटारें सो रही थीं। उनके मुख मंडल पर विजय का वास था। अब चार अश्व और दिखाई दिये। अगले अश्व पर सवार एक सूर्य समान तेजस्वी महान व्यक्ति सिंधु नरेश थे, इनके पीछे राजसो वेश भूषा में सुसज्जित राजकुमार गोपी चन्द, भवन कुमार और जग कुमार थे।

भारत सम्राट तथा तीनों राजकुमार जनता के आदर का केन्द्र बने हुए थे।

पुष्पों की वर्षा के साथ-साथ "महाराज की जय, राजकुमारों की जय," कह कर जनता अपने आपको बड़ा भाग्यशाली समझती थी।

महाराज भी हल्की-हल्की मुस्कान द्वारा उनकी श्रद्धा और प्रेम निरन्तर स्वीकार करते जाते थे। राजकुमारों के प्रत्येक हाथ में अश्व की बागें थी, दूसरे में चीतों के गलों में पड़ी हुई स्वर्ण श्रृखलायें। यह दृश्य जनता के लिए अधिक मनोरंजन की सामग्री बना हुआ था उनके पीछे युवराज जयसेन की पालकी थी। उनके पीछे शोभा नाम की गजनी पर सवार सिंधु देश की साम्राज्ञी और उनकी ननन्द, रानी बाई, माँ और फूफी के आगे छोटा राजकुमार जाम सिंह बैठा हुआ था।

शोभा का छोटा पुत्र पदम, अपनी माँ के चारों ओर चक्कर लगा रहा था। माँ उसके इस कलोल पर आत्म विभोर हो उठती थी। इनके पीछे सरदार और उनके पीछे एक सौ श्याम वर्ण घोड़ों पर सशस्त्र सैनिक दिखाई पड़ रहे थे। सब के पीछे एक सौ ऊंटों पर नाना प्रकार की सामग्री बंधी पड़ी थी। जिस स्थान पर यह काफिला विश्राम करता, वहाँ का मुखिया और जनता महाराज के दर्शन को आते, और यथाशक्ति भेंट देकर अपने को कृत-कृत्य समझते। सिन्धु नरेश की ओर से हर नागरिक को पान का एक एक बीड़ा दिया जाता।

महाराज के पधारने का समाचार नगर-नगर में उनके प्रवेश करने से पूर्व ही पहुँच जाता था। इनमें कोई नवीनता भी तो न थी। क्योंकि प्रति वर्ष यह मास इसी प्रकार बीतता था। इस काफिले के आने जाने के मार्ग निश्चित परन्तु पृथक पृथक थे।

पत्थरों की सड़कों के दोनों ओर फल-दार वृक्ष थे। एक एक कोस की दूरी पर कुआँ और हर तीसरे कोस पर एक जल सरोवर या बावली, और चन्द कमरों वाली एक एक विश्राम शाला होती थी। उन में दो प्रतिहारी तथा खाने पीने की सामग्री एवं प्राथमिक चिकित्सा की कुछ औषधियां और अश्व आदि रहते थे। यूं तो समस्त राज्य में इसी प्रकार का प्रबन्ध था, परन्तु इस मार्ग की विशेषता में कुछ नवीनता थी। (क्रमशः)

अपने व्यापार व उद्योग की उन्नति के लिए "भृगु" में विज्ञापन दीजिए।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

* शहीद का शिकवा *

डा० राम लाल वर्मा, एम०ए०,पी०एच०डी०



१५ अगस्त भारत का स्वाधीनता दिवस है। मातृ-भूमि के पैरों में पड़ी विदेशी राज्य की शृंखलाओं को तोड़ने के लिये भारत की स्वाधीनता का स्वप्न देखने वाले मुझ जैसे असंख्य युवकों ने एक संकल्प किया था, एक व्रत लिया था जिसकी परिणति है यह १५ अगस्त। पर मैंने भारत की जिस स्वाधीनता के लिये जान की बाजी लगाई थी वह खण्डित भारत नहीं था। मैंने स्वप्न में भी यह न सोचा था कि देश के तथाकथित कर्णधार स्वार्थ की किसी माया से अभिभूत मातृ-भूमि का विभाजन स्वीकार कर अपनी आँखों से इसे खंडित होता देखेगें। मुझे धीरज मिला था तब जब 'भारत छोड़ो' आंदोलन के दिनों में देश के तरुण विदेशी शासकों को समुन्द्रपार पहुँचाने का संकल्प कर चुके थे। मेरी आत्मा को तब बड़ी शान्ति मिली थी जब मुझे पता चला कि भारत माँ का लाल सुभाष, माँ का बन्धन तोड़ने के लिए सेना में से कुछ सिरफिरों को इकठ्ठा कर पाया। मुझे तब और भी संतोष हुआ था, जब मैंने सुना कि इस देश के नेतृत्व ने साम्प्रदायिक एवं विघटनकार ताकतों के आगे झुकने से इन्कार कर दिया और स्पष्ट शब्दों में ललकारा कि पाकिस्तान उनकी लाशों पर ही बनेगा। परन्तु मेरी आत्मा व्यथा से कराह उठी जब मैंने देखा कि ऐसी घोषणाएं थोथे नारे बनकर रह गई और भारत की पूर्वी एवं पश्चिमी सीमाऐं दानवीय अत्याचारों से रक्त रँजित हो उठी मानवता दानवता के आगे बेबस हो गई। जब अबोध बच्चों को उनकी माँ के सामने ही भालों और नेज़ों पर चढ़ाया गया, जब बलात्कार को ही पुरुषत्व की कसौटी समझा जाने लगा, जब एक ही रात में अपने वतन में लोग परदेसी और बेगाने हो गए, जब बस्तियां वीरानों में बदलने लगी, जब स्वत्व की रक्षा के लिए जौहर की चितायें धधकने लगीं, जब रणजीत सिंह और नलवा के देश में उनकी सन्तानों पर कायरतापूर्ण हमले होने लगे तो आप जानते हैं कि, मेरे मन पर क्या बीती? यह सब कुछ मैंने सहन किया तो केवल इसलिए कि देश का नेतृत्व आगे जाकर इन नारकीय जीवन से देश एवं समाज को उबारने में सशक्त पग उठाएगा।

पर स्वाधीनता के २३वर्ष बीत जाने के बाद भी

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

मेरी ग्रत्मा को चैन नहीं है, सोचता हूं, क्या मैंने इसलिए फाँसी का फंद। चूमा था कि फिरंगियों के स्थान पर चीनी चाऊ माऊ की जयजयकार हो, भारत पर चीनी ग्राक्रमण को लोग साधारण सीमा सँघर्ष की सँज्ञा दें? फाँसी का फन्दा रेशमी हो सूती, फन्दा तो फन्दा ही रहेगा। साम्प्रदायिकता के जिन काले नारों ने भारत को खँडित कर दिया था वे फनियर फिर सिर उठा कर हमारी राष्ट्रीय एकता को डसना चाहता है। गुलामी फिरन्गी की हो या रूस ग्रथवा चीन की, गुलामी तो गुलामी ही है। १६०५ में बंग भंग का विरोध इसलिए तो नहीं किया कि ग्राज ग्राप पूर्वी भारत पर चीन के खूनी पन्जे की छाप लगाने को कुछ कपूत ग्रागे ग्राए। मैंने ग्रौर मेरे साथियों ने फांसी के फन्दे को प्यार किया था, ग्रपने बसन्त में ग्राग लगाई थी, सुनहले स्वप्नों को सजाने के स्थान पर जंगलों की खाक छानी थी। बसन्ती चोला पहन शत्रुग्रों को भगाने का प्रयास किया। कभी ग्रातंकवादी बन माँ की मुक्ति के लिए सतत साधना की थी। विदेशियों की ग्रदालतों में निडर हो कर वतन की खाक का सर्वस्त्र मान सिर पर चढ़ाया था। दुश्मनों से बदला लेने उनके देश में, उनके घर में जा कर वर्षों तक डेरे डाले थे। समुद्र कुद कर मीलों तक पानी में पीछा करने को विवश किया था। ग्रन्डमान ग्रौर निकोबार की नमकीन हवाग्रों में रह, कोल्हू चला कर, दूर तक दिखाई देने वाली सागर की लहरों के माध्यम से वतन को सलाम किया था।

मैं नहीं जानता कि ग्राज इतने वर्षों के बाद भी तुम इस देश के श्रमजीवी वर्ग के लिए रोटी तक न जुटा पाग्रोगे, मुझे इतना ख्याल भी न ग्राया कि तुम्हारी कथनी ग्रौर करनी इतना ग्रन्तर हो जाएगा। मैं न जानता था कि इतने वर्ष बाद भी तुम ग्रट्टालिका ग्रौर झुग्गी की दूरी कम न कर सकोगे मुझे क्या मालूम कि तुम स्वाधीन हो कर भी ग्रंग्रेजी की दास्ता से मुक्ति न पा सकोगे! ग्रपने ही दो प्रदेशों की भाषा भी ग्रंग्रेजी हो जाएगी? हम ही तो थे जो ग्रासेतु हिमालय घूमते हुए भाषा के नाम पर कभो न उलझे थे, प्रान्तों के भेद के कारण कभी न लड़े थे, जातीयता के नाम पर कहीं खून-खराबा न किया था। मस्ताने थे तो केवल वतन के ग्रौर ग्राप हो कि एक दूसरे का गला काटने पर उतारू हो, राजनीति में ऐसे कीर्तिमान स्थापित किए हैं कि बुद्धी जीवी राजनीति से कोसों दूर रहने में ही भला समझने लगे हैं। तुम्हारी कोई योजना नहीं, जो दूसरे की सहायता के बिना बने। १६७० में भी तुम्हें विदेशी माल से प्यार है। कहाँ गई वह गाँधी की वस्त्रों की होली, जब लाखों करोड़ों विदेशी वस्त्रों को चौराहों पर जलाया गया था! भारतीयकरण से भी नफरत! छी: छी: यह स्वाधीनता क्यों हुई। शेर से सियार बन बैठे। भारतीयता से भी नफरत! ग्रपनी भाषा में ही दोष! ग्रपनों से बैर, गैरों से प्यार। यह तुम्हें क्या हो गया है?

यह सब देख कर मेरा मन बैठ रहा है। मैं ग्रौर कुछ कह नहीं सकता। हाँ एक बात है जिस पर मेरा विश्वास ग्रब भी ग्रडिग है। उसी के कारण मैं निराश नहीं हुग्रा। मैंने देखा कि हर काली घटा में दामिनी की दमक होती है ग्रमावस्य का ग्रन्धकार

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अन्ततः दूज के चांद को लाता ही है। अन्धकार की घड़ियाँ प्रकाश को जन्म देती हैं। प्रसव पीड़ा के उपरान्त ही नव-जन्म का उल्लास होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि देश के पश्चिमी छोर में पुनः कोई नलवा अवश्य आयेगा, रणजीत सिंह के घोड़े कभी अटक को पार अवश्य करेंगे। केशव की वाहिनी अधर्म पर विजय अवश्य पाएगी। विदेशी प्रभाव को समाप्त करने के लिए कोई सुभाष पुनः सैनिकों को एकत्रित करने में समर्थ होगा। देश की सीमाओं के विस्तार के लिए कोई विक्रमादित्य आगे आएगा। चाणक्य की शिखा पुनः खुलेगी और अधर्मानन्दों को स्वाहा कर के दम लेगी। पापी रावण के हाथों पराभूत होने वाली सीता का उद्धार राम के हाथों अवश्य होगा। यह सब कुछ अवश्य होगा, क्योंकि इस धरती के लाडले ने स्वयं कसम खाई थी कि, जब भी कभी धर्म की हानि होगी वह अवश्य अवतरित होगा। शिव स्वयं नहीं शिवा के रूप में ही तो आया करता है। इस आशावादिता के सहारे ही तो मैं जीवित हूं और आश्वस्त हूं कि वह समय आएगा और अवश्य आएगा, जब माधव के हाथों मक्कारों की पराजय होगी, जब मेरा अखण्ड भारत का स्वप्न साकार होगा। तब हम शहीद सुख की नींद सो सकेंगे और खूब सो सकेंगे, क्योंकि तब हमें कोई चिन्ता न रहेगी।

यमुना तट पर वेद व्यास जी की मूर्ति स्थापना

दिल्ली वासियों को यह समाचार पढ़ कर बहुत प्रसन्नता हुई, कि दिल्ली विकास अधिकरण (डी०डी०ए०) ने दिल्ली यमुना तट विकास के अनेक चरणों में चल रहे कार्यों के अन्तर्गत निगम बोध घाट के समीप महर्षि वेद व्यास जी (ब्रह्मर्षि पराशर और सत्यवती के पुत्र, महाभारत ग्रन्थ तथा भागवत् पुराण के निर्माता और वेदों की पुनर्रचना करने वाले) की प्रतिमा लगाने और घाट की विभिन्न दीवारों पर संस्कृत एवम् हिन्दी में गीता के श्लोक लिखवाने का निश्चय किया है। निश्चय ही यह प्रयास समस्त भारतीयों के लिए गौरव का विषय है, कि ऐसे चल रहे विभिन्न विकास कार्यों में दिल्ली प्रशासन भारत के प्राचीन गौरव को उप्युक्त स्थान पर लाने की चेष्टा निरन्तर कर रहा है।

विशेषकर दिल्ली की जनता इस प्रयास की बहुत सराहना करती है और भविष्य में भी आशा करती है कि दिल्ली प्रशासन भारत के और भी अनेक सन्त, महात्माओं, ऋषि, मुनिओं आदि का सम्मान विभिन्न प्रयासों द्वारा करता रहेगा।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

* स्वामी विवेकानन्द *

लेखक : **श्री जगमोहन चन्द्र त्रिक्खा,** बी०एस०सी०

१२ जनवरी सन् १८६३ को कलकत्ता के मुलिया मुहल्ले में बाबू विश्वनाथ दत्त के घर एक प्रतिभाशाली बालक ने जन्म लिया। माता पिता ने उसका नाम नरेन्द्र दत्त रखा। यही नरेन्द्र दत्त आगे चल कर स्वामी विवेकानन्द के नाम से हिंदू समाज में चमके और अपने ज्ञान, विवेक से सारे संसार में बंधुत्व का भाव फैला गए।

बचपन में नरेन्द्र बहुत जिद्दी और शरारती थे। कभी-कभी इतना ऊधम मचाते थे कि इनकी माता भुवनेश्वरी तंग आ कर कहा करती थी, "तू तो भगवान शंकर का प्रसाद है न, अवश्य ही तू उनके गण, भूत, प्रेतों में से कोई होगा।" तदोपरान्त उनका यही स्वभाव उनके चरित्र की विशेषता बन गया। वे एक दृढ़ सकल्प और स्वाभिमानी व्यक्ति बने।

जब नरेन्द्र चौदह वर्ष के हुए तो वे प्राय: अस्वस्थ रहने लगे। उनके पिता डाक्टरों की राय पर उन्हें रामपुर, वायु परिवर्तन के लिए ले गए। बाबू विश्वनाथ प्रसिद्ध वकील थे। साँझ होते ही रामपुर के अनेक विद्वान वकील साहब के घर इकट्ठे होते और घन्टों धर्म, दर्शन, राजनीति आदि पर विचार विमर्श होता रहता। इन विचार गोष्ठियों का नरेन्द्र की विचार-धारा पर बहुत प्रभाव पड़ा। साथ ही उनके साँस्कृतिक, धार्मिक ज्ञान में बहुत वृद्धि हुई।

अट्ठारह वर्ष की आयु में उन्होंने फिर अपना अध्ययन प्रारम्भ किया और अपने अथक परिश्रम और प्रखर बुद्धि के द्वारा उन्होंने अपनी सारी कमी पूरी कर ली।

उन्हीं दिनों उनका मन प्राय: अशाँत रहने लगा। उनके मन में प्राय: यह प्रश्न उठते रहते, इस सृष्टि का निर्माता कौन है, कैसा है, उसका क्या उद्देश्य है............" परन्तु उन्हें कहीं से भी सन्तोषजनक उत्तर न मिलता।

संयोगवश इनके पड़ोस में एक बाबू सुरेन्द्र नाथ रहते थे, जो स्वामी रामकृष्ण परमहँस के के अनन्य भक्त थे। एक दिन वे नरेन्द्र के पास आये और बताया कि उनके घर एक सत्संग है, जिसमें कोई तत्वदर्शी दार्शनिक भी आ रहे हैं। उन्होंने नरेन्द्र को भी आमन्त्रित किया। नरेन्द्र ने अपने मधुर कंठ से अपना गान भी जब सत्संग में सुनाया तो योगी रामकृष्ण परमहंस बहुत प्रसन्न हुए। जाते समय वे नरेन्द्र को दक्षिणेश्वर मन्दिर में मिलने के लिए कह गए। परन्तु नरेन्द्र अपने एफ०ए० की परीक्षा में ऐसे डूबे, कि उन्हें दक्षिणेश्वर जाने का ध्यान ही नहीं रहा।

चरैवेति - चरैवेति बढ़े चलो, बढ़े चलो।

—स्वामी विवेकानन्द

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

इन्हीं दिनों इनके विवाह की बात चीत चली, परन्तु नरेन्द्र ने यह कह कर सब कुछ ठुकरा दिया कि - उनकी राह परमपिता परमात्मा तक पहुँचने की है और विवाह उन के मार्ग में बाधा है।

कुछ दिनों बाद नरेन्द्र दक्षिणेश्वर गए। वहाँ वे फिर रामकृष्ण से मिले। इस बार नरेन्द्र के मन पर स्वामी रामकृष्ण का बहुत प्रभाव पड़ा और वे जब-तब दक्षिणेश्वर जाने लगे।

अब नरेन्द्र के मन की अशान्ति दिन प्रति दिन बढ़ने लगी। वे अपने जीवन के उद्देश्य को समझ नहीं पा रहे थे। उन्होंने रामकृष्ण से भी कई बार ऐसे प्रश्न किए, परन्तु उन्हें कोई सन्तोष-जनक उत्तर नहीं मिला। हां, उनके मन में राम-कृष्ण के प्रति अब विश्वास और आदर दिन प्रति दिन बढ़ने लगा। इन दिनों वे बी०ए० की परीक्षा की तैयारी भी कर रहे थे। बी०ए० की परीक्षा दिए उन्हें अभी थोड़ा ही समय हुआ था, कि उन पर कठिनाइयों का पहाड़ टूट पड़ा। उनके पिता का देहान्त हो गया. और घर का भार संभालना पड़ा। दुःख के समय में सम्बन्धी और मित्रगण आँख बचाने लगे। नरेन्द्र के ये दिन इतनी कठि-नाई से बीतने लगे कि एक बार वे बहुत घबरा गए. और रामकृष्ण के पास जा कर बोले... "आप मेरे लिए कुछ क्यों नहीं करते ? माँ से मेरे लिए कुछ माँगते क्यों नहीं ?"

"तुझे जो कुछ चाहिए,तू खुद क्यों नहीं माँगता ?"

कहते हैं उस समय नरेन्द्र बुद्धि को न जाने क्या हो गया। वे माँ की प्रतिमा के पास गए, परन्तु धन ऐश्वर्य न माँग कर ज्ञान और वैराग्य माँग बैठे।

कुछ ही समय में माँ के वरदान से एक ओर तो उनके परिवार के दुःख दूर हो गए, और दूसरी ओर नरेन्द्र ने संसार से विरक्त हो कर स्वामी रामकृष्ण के पास रहना शुरू कर दिया। अब उन्होंने मन ही मन में रामकृष्ण को अपना गुरु स्वीकार कर लिया और बड़े भक्ति-भाव से उनके उपदेशों को ग्रहण करने लगे। स्वामी जी ने भी अपने शिष्य को ज्ञान, दर्शन, और हिन्दू-धर्म की बहुत अच्छी शिक्षा दी। एक दिन उन्होंने नरेन्द्र को आज्ञा दी कि उसे अपने देश धर्म और समस्त मानव जाति को पतन की ओर जाने से रोकना है।

एक दिन परमहन्स ने नरेन्द्र को अकेले में बुला कर बताया कि वे अपनी सारी आध्यात्मिक शक्ति नरेन्द्र को सौंपने जा रहे हैं............और कुछ दिनों बाद १५ अगस्त १८८६ को वे इस नश्वर शरीर को त्याग कर परब्रह्म में समा गये। अब नरेन्द्र पर गुरुदेव का सारा कार्य भार आ पड़ा। परन्तु उन्होंने धैर्य नहीं छोड़ा। और अपने गुरुभाइयों के साथ मिल कर वेद दर्शनादि का घोर अध्ययन करने लगे।

'उष्ठित जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधित -

उठो जाग जाओ। लक्ष्य तक पहुंचे बिना ठहरो मत। —स्वामी विवेकानन्द

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

एक दिन उनका एक सन्यासी मित्र चुप चाप बिना बताये कहीं चला गया। इस घटना से नरेन्द्र के मन का विरक्ती-भाव उग्र हो उठा। वे अपने साथियों को छोड़ कर राष्ट्र और धर्म की वास्तविक स्थिति का अध्ययन करने निकल पड़े। इसी समय उन्होंने अपना नाम स्वामी विवेकानन्द रख लिया। स्वामी जी ने विभिन्न तीर्थ-स्थानों का भ्रमण किया और जहाँ तहाँ बिखरे योगी एवं तपस्वियों से भी मिले।

भ्रमण करते करते वह कन्या कुमारी पहुँच गये। समुद्र में उठी एक शिला देख तैर कर उस पर जा पहुँचे, और वहीं समाधी लगा कर बैठ गए। वहाँ उन्हों ने अमरीका में होने वाले सर्व-धर्म सम्मेलन में भारत की ओर से भाग लेने का निश्चय किया।

३१ मई, १८९३ई० को वे जहाज द्वारा बम्बई से कोलम्बो, हांगकाँग, जापान होते हुए अमरीका के लिए रवाना हो गए। अमरीका में स्वामी जी को धनाभाव और जान पहचान की कमी के कारण अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

इन्हीं दिनों शिकागो में एक प्रदर्शनी हो रही थी। इस प्रदर्शनी में वे अमरीकावासियों के वैज्ञानिक अन्वेषणों को देख कर बहुत प्रभावित हुये और उनका हृदय अपने देश के पिछड़े-पन को याद कर के बहुत दुःखी होने लगा।

कुछ दिनों बाद स्वामी जी को पता लगा कि धर्म सभा में सम्मिलित होने के लिए आवेदन-पत्र देने की आखिरी तारीख निकल गई है। इस बात से स्वामी जी अत्याधिक चिन्तित हो उठे। संयोगवश एक दिन स्वामी जी की एक संभ्रांत महिला से रेलगाड़ी में भेंट हो गई। उसे स्वामी जी ने अपने देश की संस्कृति, और परम्पराओं से अवगत कराया। वह महिला बहुत प्रभावित हुई और स्वामी जी को अपने घर ले गई। उसने उन का परिचय हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रो० हाइट से कराया। प्रो० हाइट स्वामी जी के ज्ञान, संकल्प और व्यक्तित्व को देख कर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने धर्म सभा के आयोजकों पर अपने व्यक्तिगत प्रभाव का प्रयोग कर के स्वामी विवेकानन्द का नाम रजिस्टर करवा दिया।

२ सिम्बर, १८९३ ई० को धर्म-सभा में जब उन्हें बोलने के लिए बुलाया गया तो दर्शकों की इतनी बड़ी भीड़ को देख कर वह क्षण भर के लिए घबरा गए। उन्हों ने आँखें बन्द कर के अपनी सारी शक्तियों को इकट्ठा किया और मन ही मन में गुरुदेव का स्मरण कर के बोल उठे—"अमरीका निवासी बहिनो और भाइयो..........।" इतना सुनते ही जनता ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उनका स्वागत किया।

स्वामी जी ने धर्म-सभा में वेदाँत-दर्शन और एकेश्वरवाद पर व्याख्यान दिया, जिसे सुन कर श्रोतागण गद्-गद् हो गए।

अब सारे अमरीका में स्वामी जी के ज्ञान, और वेद-दर्शन की दुन्दुभी बज उठी। समाचार पत्रों ने मुख्य पृष्ठों पर स्वामी जी के चित्र छापे और उन के व्याख्यान पर अनेकों स्तभ प्रकाशित कर दिए। स्वामी जी को भाषणों के लिए जगह-जगह आमंत्रित किया जाने लगा। ईश्वर कृपा से अब

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

स्वामी जी के अनेक अमीर शिष्य मित्र बन गए और उनको आवश्यक धन-सामग्री की भी कमी न रही।

स्वामी जी के अमरीकी जनता पर बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर वहाँ के ईसाई पादरियों ने विभिन्न तरीकों से स्वामी को कलुशित करने का प्रयत्न किया, परन्तु स्वामी जी पर उनका कोई प्रभाव न पड़ा। हाँ, उन के भाषणों में प्रखरता जरूर आ गई। अब वे जब तब अपने भाषणों में इसाई पादरियों को फटकारने लगे।

स्वामी विवेकानन्द की इन सफलताओं का समाचार जब भारत पहुंचने लगा, तो देश में जागृति की एक लहर सी दौड़ गई। जगह-जागह धार्मिक सभाएं होने लगीं और स्वामी जी के संदेशों का धुआंधार प्रचार होने लगा। लोगों का मनोबल बढ़ा और जनता अपनी पुरानी संस्कृति को फिर आस्थापूर्वक अपनाने लगी।

लग-भग एक वर्ष के बाद इंग्लैंड निवासियों के निमन्त्रण पर इंग्लैंड गए। वहा उन्हें फिर ईसाई पादरियों ने घेरने की कोशिश की, परन्तु उनकी प्रखर बुद्धि गहरे ज्ञान के आगे टिक न सके। यहीं उन्हें कु० मारग्रेट नोब्ल मिली जो आगे चल कर 'भगिनी निवेदिता' बनी।

एक बार फिर स्वामी जी को अमरीकावासियों के अनुरोध पर अमरीका जाना पड़ा। वहाँ उन्होंने सुव्यवस्थित ढंग से भारतीय दर्शन, आदि की व्यवस्था की और फिर ६ फरवरी १८९६ ई० को लंदन होते हुऐ भारत लौट आए।

स्वदेश लौटने पर इस महान तपस्वी का स्थान स्थान पर हार्दिक स्वागत हुआ। जहाँ तहाँ उन्हे व्याखयान देने को कहा गया। अब स्वामी जी ने अपने धर्म में सुधार करने शुरु कर दिए। उन्होंने मुख्य रुप से युवकों को अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ धर्म, समाज में सुधार करने और सदियों से चली आ रही दरिद्रता को उखाड़ फेंकने का अनुरोध किया।

देश-विदेश में अनेकों रामकृष्ण मिशन की शाखाऐं स्थापित हो चुकी थी और बड़े उत्साह के साथ हिन्दु धर्म और संस्कृति का प्रचार होने लगा था। अब स्वामी जी संतुष्ट थे, उन्हें यह लग रहा था कि उन्होंने गुरुदेव को दिए गए वचनों को निभाया है।

लगभग डेढ़ वर्ष के बाद उन्हें एक बार फिर अमरीका जाना पड़ा। वहीं उन्हें महसूस होने लगा कि उनके जीवन के अंतिम क्षण नजदीक आ रहें है। इसलिए वे शीघ्र आवश्यक काम निपटाकर स्वदेश लौट आए।

अन्तिम दिनों स्वामी विवेकानन्द ने लोगों से मिलना और बोलना बहुत कम कर दिया। मिशन का कार्य भार भी गुरुभाईयों पर छोड़ कर वे अधिकाँश समय ध्यान मग्न ही रहने लगे।

४ जुलाई, १९०२ ई० की रात को लगभग नौ बजे हिन्दूराष्ट्र के इस महान तपस्वी ने न जाने किस क्षण लेटे-लेटे अपने आपको परमात्मा में विलीन कर लिया।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

विवेकानन्द शिला-स्मारक—राष्ट्रजीवन का एक नवीन केन्द्र

लेखक : श्री स्वराज्य प्रकाश गुप्त, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत :
अभ्युत्थानामधर्मस्य तदात्मनम् सृजाम्यहम् ।

गीता के उपरोक्त कथन की सार्थकता सदैव से सत्य रही है। १९वीं शताब्दी के अन्तिम चरणों में जब ईसाई मतावलम्बियों ने हिन्दू धर्म को बुरी तरह से निन्दित किया और अपने देश के विचारकों को भी अपना धर्म हेय लगने लगा उस समय धर्म के वर्चस्व को पुनः स्थापित करने के लिये भगवान श्रीकृष्ण का नया अवतार स्वामी विवेकानन्द के शरीर में हुआ।

आज से ठीक ७७ वर्ष पूर्व २ सितम्बर को शिकागो के अन्तरराष्ट्रीय सर्व धर्म सम्मेलन में जिस कृष्णावतारी विवेकानन्द ने हिन्दू धर्म की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया, उसकी स्मृति में भारत के असंख्य लोगों ने अपना तन-मन-धन देकर कन्याकुमारी के प्राँगण में एक अद्भुत शिला-स्मारक खड़ा कर दिया है।

२ सितम्बर को प्रातःकाल साढ़े नौ बजे महामहिम राष्ट्रपति श्री वि० वि० गिरि ने इस स्मारक का विधिवत् उद्घाटन किया। उस दिन से लेकर २ माह तक लगातार यह समारोह चलता रहेगा। ३१ अक्तूबर १९७० के दिन इस कार्यक्रम का समारोह महामहिम उपराष्ट्रपति श्री गोपाल स्वरूप पाठक के करकमलों द्वारा होगा। इस अवसर पर शिला-स्मारक समिति की ओर से एक ग्रन्थ प्रकाशित होगा। डा० लोकेशचन्द्र द्वारा सम्पादित आठ सौ पृष्ठों का यह ग्रन्थ संसार के अन्यान्य देशों के ७० विद्वानों द्वारा लिखे गये सारगर्भित लेखों का एक वृहत संग्रह है। सौ से अधिक काले और रंगीन चित्रों तथा २५० रेखा-चित्रों से अलंकृत इस अद्भुत ग्रन्थ में संसार की संस्कृति और विचार को 'भारत की देन' नामक विषय पर एक गहरा प्रकाश डाला गया है।

जापान से लेकर दक्षिणी अमेरिका तक फैले हुए वृहत भूभाग में भारतीय संस्कृति न केवल एक इतिहास की वस्तु है, वरन कम से कम दक्षिण-पूर्वी एशिया में वह अभी भी एक जीती जागती जीवन प्रणाली है। गंगा और सरस्वती के तट से उठी हुई हिन्दु संस्कृति की इस लहर को हमारे देश के अनेक साधु सन्तों ने संसार के कोने कोने में हर शताब्दी में पहुँचाया। सन्तों की इस लम्बी शृंखला में स्वामी विवेकानन्द एक आधुनिक कड़ी के रूप में हमारे सामने आते हैं। ऐसे महापुरुष की स्मृति में प्रकाशित यह ग्रन्थ एवं स्थापित कन्याकुमारी का शिला-स्मारक अपने में कोई इति श्री नहीं है।

कन्याकुमारी के चारों ओर फैले हुए भूखण्ड में साथ ही साथ एक नई योजना को जन्म दिया जा रहा है। इस योजना के अन्तगत एक ऐसे

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

शिक्षा केन्द्र की स्थापना है, जिसमें विवाहित उच्च शिक्षा प्राप्त युवकों की जोड़िओं को हिन्दु धर्म की पूर्ण शिक्षा देकर उन्हें गिरि जनों और वनवासियों के बीच में धर्मप्रचारकों के रुप में भेजा जाएगा । इस केन्द्र से निकले हुए धर्मप्रचारक विदेशों में फैले हुए लाखों हिन्दु-जनों का भी दर्शन करेंगे ऐसी अपेक्षा है। यह ही नहीं, इस केन्द्र में एक शोध विद्यालय की स्थापना होगी।

संसार इस बात को जानता है कि ऋग्वेद के काल से लेकर प्राय: १५वीं शताब्दी तक हिन्दु-धर्म की समय समय पर नई नई व्याख्यायें हुई हैं। उसने हिन्दू धर्म को कभी मरने नहीं दिया, बल्कि उसने हिन्दू धर्म को हमेशा ही प्रगतिशील रखा। प्रश्न होता है कि प्राचीन काल में यदि धर्म के नये नये ग्रन्थ लिखे जा सकते थे तो क्या आज भारत में ऐसा कोई मनीषी बचा ही नहीं है, जो नये ग्रथों का निर्माण करे ? हिन्दु धर्म को आज भी प्रगतिशील बनाये रक्खें। समिति के लोगों का प्रयास है, कि भारत के २०वी शताब्दी के मनीषीओं द्वारा नए ग्रन्थों का निर्माण हो और वेदों द्वारा आरम्भ की गई भारतीय विचार और दर्शन की शृंखला को एक नई लम्बाई दी जाए।

शिला-स्मारक की यह कल्पना सन् १९६२ में विवेकानन्द जन्मशताब्दी पर रामकृष्ण मिशन द्वारा आरम्भ की गई थी, किन्तु थोड़े से ईसाई मछुओं द्वारा इसका विरोध करने पर मिशन ने इस कार्य को छोड़ दिया। उसके पश्चात यह योजना केरल के वयोवृद्ध नेता एच् मन्नत पद्मनाभन तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के श्री एकनाव रानाडे के हाथों में आई। १९६३ में ३३२ संसद सदस्यों के सम्मिलित प्रयास के द्वारा पंडित नेहरु ने इस स्मारक को स्वीकृति दे दी। फिर क्या था ? नगर नगर और ग्राम ग्राम में इसके लिए धन संग्रह आरम्भ हो गया। अबतक पचास लाख से भी अधिक धन इस पर व्यय हो चुका है।

कन्याकुमारी के जिस शिला पर यह स्मारक बन रहा है, वह हिन्द महासागर, गंगासागर एवं सिन्धुसागर के संगम पर स्थित है। इस स्मारक को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहिला भाग गर्भगृह है, जहाँ स्वामीजी की सात फुट की परिव्राजक - रूप की काँस्य प्रतिमा को स्थापित किया गया है। इस के ऊपर का गुम्बद कलकत्ता के बेलूर मठ के गुम्बद के आकार का है। इस के चारों स्तम्भ दक्षिण भारतीय पद्धति की वास्तुकला के प्रतीक है। इन पर शखधर, वीणा-वादक, विद्याधर तथा मयूर आदि के चित्र उकेरे गये हैं। इस के सामने एक अर्धमण्डप है, जिस के स्तम्भ चोल पद्धति के होते हुए भी मौलिक है । इन पर मोती चुगते हंस, लताजाल तथा अन्य प्राकृतिक द्रश्य अंकित हैं। इस मण्डप मैं पूजा और प्रवचन का आयोजन होता रहेगा। पीछे एक ध्यान मण्डप है, जिस के स्तम्भ पल्लव पद्धति के गजस्तम्भ हैं। सामने केन्द्र -बिन्दु पर देवनागरी में "ॐ" लिखा हुआ है। इसके प्रवेश द्वार पर स्तम्भ अजन्ता पद्धति के हैं। और ऊपर का भाग, पञ्च-कलशीय है । देवीपाद मूलस्थान का निर्माण विश्वकर्मीय के चतुर्वंत पद्धति पर हुआ है।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

विवेकानन्द शिलास्मारक तथा इसके साथ संलग्न जिन योजनाओं का वर्णन किया गया है वे २०वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की एक ऐसी साकार कल्पना है, जिस का दूसरा उदाहरण नहीं है। इस सबका सबसे अधिक श्रेय जिस महापुरुष को है, वह धोती कुर्ते में रहने वाले सीधे सादे किन्तु विलक्षण संगठन क्षमता रखने वाले सन्यासी एकनाथ रानाडे को ही है।

(पृष्ठ २ का शेष)

और कन्याकुमारी में निर्मित स्वामी विवेकानन्द शिला स्मारक के सम्बन्ध में विद्वान लेखक श्री स्वराज्य प्रकाश गुप्त द्वारा लिखित विशेष लेख प्रस्तुत किया जा रहा है। जिसमें शिला स्मारक के निर्मित इस के इतिहास एवँ वास्तुकला का पूर्ण विवरण सविस्तार भावनायुक्त शब्दों में दिया गया है।

मुख पृष्ठ पर चित्र के लिए हम श्री (डा०) लोकेशचन्द्र जी के विशेषाभारी हैं, जिन्होंने पत्रिका की उन्नति एवं लोकप्रियता में विशेष रुचि लेते हुए, हमें स्वामी विवेकानन्द जी की कन्याकुमारी के स्मारक मन्दिर में स्थापित प्रतिमा का प्रतिरुप चित्र प्रदान किया है।

इस पावन भूमि पर जिन महान व्यक्तियों ने हंसते हंसते फाँसी के रस्से को चूमा, गोलियों के आगे सीने तान दिए अथवा तोपों से अपने शरीर को फीते फीते करवाया, वह सब जिस लक्ष्य की पूर्ति के लिये अपना बलिदान दे गए, वह कहाँ तक पूरा हुआ, उसका परिचय डा० राम लाल वर्मा ने 'शहीद का शिकवा' लिख कर दिया है, यह लेख 'हिन्दुस्तान' दैनिक पत्र में प्रकाशित हुआ था। हम उपरोक्त पत्र के हृदय से आभारी हैं।

□ □ □ □

केरल राज्य की लड़कियों को ईसाई मिशनरी जिस भान्ति योरुप भिजवा रहें हैं, उसके सम्बन्ध में विभिन्न संस्थाओं तथा राजनैतिक दलों ने बहुत रोष प्रगट किया है, और करना भी चाहिए, क्योंकि जहाँ हमारे देश के कुछ व्यक्तियो को खरीद अथवा विभिन्न लोभ दे कर ईसाई मत को फैलाया जा रहा है, हम भारतीय, संसार की दृष्टि में अपमानित भी हो रहें हैं। किन्तु हम यह क्यों भूल जाते हैं कि भारतीय नागरिकों का धीरे धीरे इस प्रकार से ईसाई मत की गोद में चला जाना क्या हमारी सामाजिक और राजनैतिक गिरावटें नहीं ? इसके लिए शासक वर्ग इतनी रोकथाम नहीं कर सकता, जितना कि स्वंय हिन्दू; क्योंकि जो व्यक्ति धर्म-भ्रष्ट हो रहे हैं, उसकी जिम्मेदार आर्थिक जीवन में विभिन्नता तथा सामाजिक स्तर पर अनुचित व्यवहार है।

...सम्पादक

'भृगु' हिन्दू समाज की जागृति हेतु अपूर्व पत्रिका है। इसके नियमित ग्राहक बनें। आप का सहयोग प्रार्थनीय है।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

BINNY'S

TEXTILES

EMPORIUM

FOR

Suitings Royalists, Consul, Cromwell, Ambassador, Tussores, Hanava, Pedigree, Double zero, Palm Court etc. Shirtings, Vanity, Tudor Rose, (Drip Dry) Fiesta, Double Six, Opel, Mascot, Lustlin, Starlight Check, Coronation, Escort, etc. Bintex : Lovely Sarees, Bed Spreads Towells, Check Shirtings Furnishing and other Handloom Varieties.

Marlborough Suitings, Shirtings
Attractive Varsity Suitings, Cotswol, Angola, & SilK Etc. Etc.

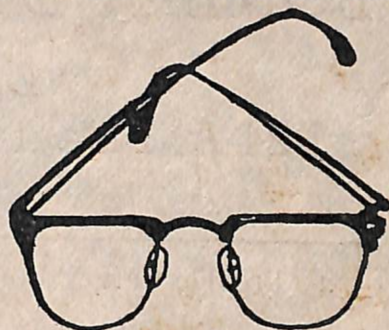
Please Visit : **ROYALIST**

1/20, Lajpat Nagar-II, (Veer Savarkar Marg,) New Delhi-24.

EYE TESTS
(C.G.H.S. Approved)
SPECTACLES, GOGGLES AND
VARIETY OF QUALITY
FRAMES AND LENSES

KRISHNA OPTICALS

SCIENTIFIC OPTICIANS
II-J/24-B, LAJPAT NAGAR,
(Veer Savarkar Marg) NEW DELHI-24.



अनारकली उपहार गृह

प्रत्येक आयु के बालक बालिकाओं के लिए
क्षेत्र में सब से लोकप्रिय उपहार गृह

४०-डिफैन्स कालोनी मार्किट,
नई दिल्ली-३

(टेलीफोन नं० ६२४०८६)

Telephone : 625648

WE SELL & REPAIR

WRIST WATCHES

ALARMS & WALL CLOCKS

New Empire Watch Co.

SERVES TO YOUR SATISFACTION

CHARGES MODERATE

E-1, Lajpat Nagar-II,
Veer Savarkar Marg,
NEW DELHI-24.

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

A BIG NEWS FOR ALL
AN ULTRA MODERN SHOW ROOM
SAPNA AGENCY
OPENS
A Famous name for latest and
Quality Textile Products of
BOMBAY DYEING & MFG. Co. LTD.
"DAWAR BHAWAN"
J-24-A, Lajpat Nagar-II, Veer Savarkar Marg,
NEW DELHI-24.

To Provide Care & Long Life to
YOUR
SPECTACLES
Always Ask for Dependable and
Attaractive Spectacle cases Availab le
with your Optician-Manufactured by
Subhash Industries
II/35, Rajinder Nagar, New Delhi 60
PHONE : 584292

Care for the eyes, is the care of life.
EYE TESTS
(C. G. H. S. APPROVED)



Spectacles, Goggles and
variety of quality
Frames and Lenses
CHARGES MODERATE
YAMUNA OPTICIANS
26, Main Market,
Lodhi Colony,
New Delhi-3.
D/23, Lajpat Nagar-I
Veer Savarkar Marg
New Delhi-24

Printed and Published by Dr. P. R. Chhibber, 145-B, Amar Colony, New Delhi-24.
Printed at SATYA PRINTERS, 486, Lajpat Rai Market, Delhi-6

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri